उम्मीद, सपने और जिंदगी

पितृसत्ता, शोषण और दुर्व्यवहार

भूमिका

इस शोध कार्य में मैंने वैश्वीकरण के दौर में सरोगेसी की अवधारणा के सभी पहलुओं को शामिल करने का प्रयत्न किया है। भूमंडलीकरण के कारण महिलाओं पर पितृसत्ता का नया रूप सामने लाने की कोशिश कि है। वर्तमान समय में भी महिलाओं पर पितृसत्तात्मक वर्चस्व किस तरह कमाया है। भूमंडलीकरण और सरोगेसी के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक शारीरिक, मानसिक कानूनी पहलुओं के स्त्री जीवन पर पडने वाली प्रभावों की चर्चा की हैं। ये प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों नजरियों से देखने का प्रयत्न किया गया है। विश्लेषण के साथ अपना निष्कर्ष निकालने की कोशिश की है। कुछ सरोगेसी के प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न किया गया है।

वैश्वीकरण को समझना बहुत मुश्किल साबित हुआ है। वैश्वीकरण एक जटिल आर्थिक, राजनीतिक सांस्कृतिक और सामाजिक समय और दूरी का राष्ट्र-राज्य से आगे संकुचन उत्पन्न करती है। वैश्वीकरण के वर्तमान धारा का उदारीकरण और निजीकरण से अभिन्न सम्बन्ध है। यह पूंजी; श्रम, उत्पाद प्रौद्योगिक की और सूचना के जरिये आधुनिकीकरण राष्ट्र निर्माण पर राष्ट्रों के बीच गठबंधन निर्माण के साथ ही उत्पन्न हो रही है। "भूमंडलीकरण उस सफर का नाम है जो उन्नीसवीं सदी के सातवें दशक में आधुनिकता ने शुरू किया था। आधुनिकता को इंसान के सोच-विचार में तरह-तरह की क्रांतियां करने का श्रेय दिया जाता है। लेकिन उसकी व्याख्याओं में यह पहलू सबसे कम उभर कर आ पाता है कि वह भूमंडलीकरण की वाहक भी है। जब तक वैश्वीकरण का यथार्थ अपने पूरे विस्फोट के साथ प्रकट नहीं हुआ था विविधता और बहुलता को आधारभूत सिद्धान्त मनाने वाले चिंतक किस्म-किस्म की आधुनिकताओं का विमर्श चलाने में लगे हुए थे। इस विमर्श में आधुनिकता की वह प्रवृत्ति छिप गयी थी। सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों को समरूपीकरण की

तरफ धकेलती है। लेकिन 1990 के दशक में जैसे ही भूमंडलीकरण मुख्यधारा के ऊपर हावी हुआ और वैसे ही यह असलियत एक बार फिस निकल कर सामने आ गयी थी कि यूरोपीय ज्ञानोदय की कोख से जन्में आधुनिकता के सार्वभौम विचार में एक विश्ववाद का पहलू एक शक्तिशाली अन्तर्धारा के रूप में मौजूद है। वैश्वीकरण को अगर आधुनिकता की आर्थिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाए तो अपने सफर के पहले 50 साल में वह काफी तेज रफतार से दौडता नजर आता है। पहले अस्सी के दशक में उत्पादन का वैश्वीकरण हुआ। जिसकी अगुआई बहुराष्ट्रीय निगमों के हाथ में थी। इन निगमों ने अपना उत्पादन-आधार उन विकासशील देशो में स्थानांतरित कर दिया जहाँ माल और सेवाओं का घरेलू बाजार चढ रहा था। 90 वे के दशक में वित्तीय पूँजी के भूमंडलीकरण के लिया जाना जाता है। वैश्वीकरण ने लैंगिक परिप्रेक्ष्य को धता बताते हुए नारी मुक्ति आंदोलन के कमजोर आर्थिक विमर्श का फायदा उठाया और दावा किया कि बाजार के जरिये एक 'पावर वूमेन का सृजन कर सकता है। उसने तीसरी दुनिया की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं पर ऐसा दबाव पैदा किया कि वे विदेशी मुद्रा कमाने की खातिर अपनी महिला नागरिकों के नियति के लिए भी तैयार हो गये, और इस तरीके से महिलाओं एक वस्तु के रूप में समझा जाने लगा। वैश्वीकरण ने पितृसत्ता को बढवा दिया। इसके साथ-साथ महिलाओं का बाजारीकरण होने लगा। वैश्वीकरण के जरिये अगर महिलाऐं घरों से बाहर मतलब सशक्त हुई है। इसका अर्थ सीधा है कि तो दूसरी तरफ महिलाओं के साथ होने वाले शोषण तथा दुर्व्यवहार अधिक बढ रहा है। महिलाओं पर इसका सकारात्मक प्रभाव से अधिक नाकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।'[1]

मातृत्व वस्तुत स्त्री शरीर के साथ जुडी एक नैसर्गिक अवस्था है। परन्तु स्त्री की दृष्टि से यदि मातृत्व का अध्ययन किया जाये तो कई मतान्तर स्पष्ट होते है। प्रसिद्ध विचारक ऐंगल्स ने अपनी महत्वपूर्ण कृति 'परिवार निजी सम्पत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति' में परिवार के बनने की ऐतिहासिक विवेचना

[1]अभय कुमार दुबे : भारत का भूमंडलीकरण, पृष्ठ सं. 32-34।

की। इस क्रम में उन्होंने स्त्री की यौनिकता पर मातृत्व के माध्यम से निमंत्रण किए जाने को व्यख्यित करते हुए कहा था कि माँ बनना औरतों की ऐतिहासिक घर या निजी सम्पत्ति, राज्य एवं परिवार के माध्य पितृसत्तात्मक संबंधों को भी तलाशने का प्रयास किया था सुलामिथ फायर स्टोन 1970 में लिखित अपनी कृति द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स में यह मानती है कि पुनरूत्पादन की क्षमता में इस प्राकृतिक जैविक भिन्नता के कारण समाज में अन्य जेंडर आधारित विभेदों का विकास होता है। इस भिन्नता को समाप्त करने की जरूरत है। हमें एक रणनीति के तहत भ्रुण को कृत्रिम गर्भ (Artiyical Womb) में बढने की प्रक्रिया को अपनाना होगा। तकनीकी प्रक्रियाओं की सहायता से अपने शरीर पर नियंत्रण प्राप्त कर पाएगी।

फायर स्टोन का आशावादी रूख जिसमें वे पुनरूतपादन की तकनीक को स्त्री मुक्ति की संभावना के रूप में देख रही थी। बाद में कई नारीवादियों ने इस विचार पर संशय व्यक्त किया। उदाहरण के लिए इस बात पर सर्व सहमति थी कि प्रजनन पर नियंत्रण की तकनीक ने व्यापक तौर पर स्त्रियों को लाभान्वित किया है। बावजूद इसके अभी भी इन संसाधनों तक सभी स्त्रियों के समान पहुँच सुनिश्चित नहीं हो पायी। उन्होंने कुछ तकनीकों की विशेष आलोचना की है। खास तौर पर वह तकनीक जो बच्चे के जन्म का प्रबंधन करती है।

नारीवादियों की आलोचना

पुनरूत्पादन की तकनीक को लेकर विभिन्न नारीवादी धाराएं विभाजीत है। परन्तु उनमें अधिक संख्या इसके आलोचकों की है। इसे लेकर कई किस्म के प्रश्न उठते है। जैसे: क्या पुनरूत्पादन की तकनीक ने स्त्रियों की स्वायत्तता प्राप्त की गई है? इसका भारत की महिलाओं पर क्या प्रभाव पडा है? किस कीमत पर यह स्वायत्तता प्राप्त की गई है। इन तकनीकों ने स्त्री शरीर पर हिंसा के अवसरों को बढाया। पुरुषवादी वर्चस्वशाली विज्ञान तथा चिकित्सा जगत् में इस प्रकार की तकनीकों के जरिये पुरुषों का नियंत्रण स्त्री के शरीर के ऊपर प्रबल हुआ है।

स्वास्थ्य कर्मियों ने समूह इस मिथक पर प्रश्न खडे किए है जो इस तकनीक को अत्यंत फायदेमंद बताती है। कुछ देशों में परिवार नियोजन कार्यक्रम के दौरान इन दवाओं के भयानक दुष्परिणामों की तरफ ध्यान इंगित करते हुए उन्होंने बताया कि इस पूरी प्रक्रिया में स्त्री स्वास्थ्य तथा प्रजनन अधिकारों की लगातार अनदेखी होती है। राज्य सत्ता का उद्देश्य स्त्री का गर्भ निरोध नहीं, जनसंख्या नियंत्रण है।

रेडिकल नारिवादियों का एक समूह पुनरूत्पादन की तकनीक को सिरे से खारिज करते हुए मानता है कि पितृसत्तात्मक तकनीक स्त्री शरीर पर नियंत्रण के माध्यम से प्रजनन की प्रक्रिया को ही स्त्री से छीनकर उसे चिकित्सा उद्योग को सौंप देते है। वे स्त्री शरीर के अस्तित्व को ही अस्वीकार करते है। औद्योगिक प्रजनन अपने नस्लीय तथा लैंगिक चरित्र के कारण सिर्फ लाभ पर केन्द्रीत है, इसलिए इस पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

सरोगेसी के सन्दर्भ में देखे तो कुछ साहित्य का पुनरावलोकन करने का प्रयास किया है। जैसे, भीष्म साहनी की माधवी नाटक 1984 की भीष्म साहनी द्वारा लिखित पुस्तक में स्त्री के प्रति असमानता तथा पितृसत्ता का पूरा-पूरा वर्चस्व दिखाई पड़ रहा है। तब से लेकर आज भी पितृसत्ता का अधिपत्य महिलाओं पर दिखाई पड़ रहा है। चारों तरफ से स्त्री के लिए ही सारे कर्तव्य, रीति रिवाज की बंधाता बनाई गयी है। तथा पितृसत्तात्मक सोच के अनुसार चलना पड़ता है। तथा जीवन उन्हीं के मुताबिक जीना पड़ता है। इस तरह हम सरोगेसी की अवधारण का आरंभ माधवी से होता है। वह अपने पिता का वचन पूरा करने तथा गलवा की प्रतिज्ञा को निभाते-निभाते अपने लिए जीना भूल जाती है। और उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए वह सरोगेसी का साहरा लेती है। अन्त में प्रतिज्ञा, कर्तव्य, वचन पूरा होने पर उसका परिणाम उसको नहीं। तथा उन पुरूषों को दिया जाता है। जिन्होंने उस नारी का शारीरिक, मानसिक रूप से शोषण किया था।

Birthing A market a study on commercial surrogacy :Sama Research group for women and health, New Delhi, 2012 इस pro........ of Surrogates, surrogacy agents, surrogacy centers, and commissioning parents अध्याय में सरोगेट सेंटर तथा सरोगेसी की वर्तमान स्थिति क्या है तथा इनके लिए जो एजेन्सीयां बनाई गई है। उनकी रूप रेखा को तैयार करना तथा उनके लिए कि जा रही सुविधाएं एवं व्यवस्थाओं का अध्ययन करना है। उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति कैसी है। सरोगेट मदर तथा सरोगेसी एजेन्सीयों की सूचनाओं को सही तरीके से प्राप्त करना इन एजेन्सीयों के बीच उसका अन्र्तसम्बध कैसा है। सरोगेसी में हिस्सा लेने वाली महिलाओं के लिए व्यवस्थाओं का समावेश किया गया। सरोगेट महिलाओं को सरोगेसी में प्रवेश करने से पहले उनका, बैक ग्राऊंड आयु, शिक्षा, कार्य/व्यवसाय, आय, जाति, धर्म किस परिवार प्रकार के परिवार, मार्शल स्टेटस (उनकी कानूनी स्थिति) उनका निवास स्थान और उनको एक निश्चित क्षेत्र में रखना सरोगेसी के लिए विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं को उपलब्ध करना। क्या ये सारी बाते महिलाओं को प्रभावित करती है।

Sama, (2010) Cheap and Best www.arts.com, Analysis of websites, brochures and advertisements on assisted reproductive technologies in India. इसमें हमें दखने को मिलता है। selling Art reproductive Tourism in India Aissted reproductive technology का Package IVF देता है तथा यहां विदेशी घूमाने के लिए आते है। तथा गरीबी के अभाव के कारण यहां के लोग सरोगेसी के लिए कम पैसे रूपये की मांग होती है। यहां पर विदेशियों को अच्छे तथा सस्ते डॉक्टर भी मिलते है। पॅकेज विदेशियों के लिए ही है। अच्छी-अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराना Samad IVF Hospital और केरला राज्य सरकार से Promote किया जाता है। यहां पर विदेशी लोग अपने बच्चे पाने की चाहत को पूरा करते है। यह center test-tube baby के नाम से जाना जाता है। लेकिन अब यह क्लीनिक सरोगेसी के नाम से ऊभर कर सामने आया।

Promotion of surrogacy :समाज में सरोगेसी का Promotion का अर्थ यह कह सकते है। IVF की यह संस्था भारत में बहुत तेजी से काम कर रही है। IVF में जर्मन Couple अपने सरोगेसी treatment के लिए एशिया जाते है। तथा भारत भी बहुत बडा केन्द्र बन गया है। surrogacy in the media भी अपना रोल निभा रही है। सरोगेसी का कारोबार दिन पर दिन बढता जा रहा है।

StellimaJally : Law, Technology and women : Challenges and opportunities, ... Press Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, 2010, P 129-153

इस अध्याय में हमने देखा की अन्तरराष्ट्रीय कानूनी Jrame, work वैश्वीक स्तर पर कही छूट गया है। संयुक्त राष्ट्र वाले देश अनुच्छेद 16 के तहत मानव अधिकार 1948 कहता है। परिवार में सभी लोग समान है। पुरूष और महिला अलग-अलग नहीं है। मतलब कि आयु, रंग, राष्ट्र और धर्म के आधार पर हम पुरुष स्त्री को अलग कर सकते है। इस तरह की बाते हमें अध्याय में देखने को मिलती है। भारत में सरोगेसी के लिए बनाये गये कानून 2010 के अनुसार सरोगेट मदर सरोगेसी कर सकती है। परन्तु विदेशों में यह कानून लागू नहीं किया जाता है। विदेशों में केवल Commercial surrogacy को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

Indian Lesgslative and Judicial approach : भारत देश में commercial सरोगेसी booming का व्यापार होता है। भारत 499 million industry है। India में सरोगेसी तथा सरोगेट मदर गुजरात के सूरत और आनंद, मध्यप्रदेश में इन्दौर और मुंबई में पुने में पाया जाता है। पुर्नउत्पादन तकनीक के तहत ICMR ने 2000 में अपना सरोगेसी के लिए Statement दिया कि इसके तहत सरोगेट मदर की सारी आवश्यकताओं तथा सुविधाओं को देना। तथा कानूनी तरह से उसका नाम, आयु पता सब कुछ पंजीकृत होता है। तक कि कोई समस्या बाद में ने हो तथा एक बच्चा पैदा होने के बाद कानूनी रूप से एक प्रमाण पत्र देते है। जिसमें डॉक्टर के हस्तक्षर होते है।

सरोगेट मदर से गर्भधारण करते समय जो Financial Agreement सरोगेसी के लिए किया जाता है। इसमें Aissted Reproductive technology center शामिल रहते है।

Aissisted Reproductive Technology Act 2008 में।

Regulation of surrogacy in Indian context : यह एक सरोगेसी शब्द Latin भाषा के Subrogreसे बना है जिसका अर्थ appointed to action the place of यह reproductive तकनीक के तहत देखा जाता है। यह तकनीक सरोगेसी दो प्रकार की होती है। भारत में इसकी रूपरेखा दिन पर दिन फैलाती जा रही है। यहां पर भी यह एक व्यापार के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। Assisted reproductive technologies Bill and Rules 2010 के द्वारा भारतीय council of Medical Research ने सरोगेसी के लिए Regulating system arrangement किया है।

यह तकनीक उन दम्पत्ति के लिए है जो महिलाएं संक्रामण रूप से ग्रसित है। वही लोग इस पुर्नउत्पादन की तकनीक का फायदा ले सकते है। सरोगेट मदर को लेने के लिए कानूनी रूप से सरोगेसी धारण करवाने के लिए agreement अनिवार्य है।

1) यह तकनीक के तहत सरोगेट मदर की देखभाल तथा उनकी आवश्यकताओं और उनकी सुविधाओं का ख्याल रखना। जब तक बच्चे का जन्म न हो जाये।
2) एक सरोगेट मदर तीन बच्चों को जन्म दे सकती है तथा हर बच्चे के जन्म के बाद अगले बच्चे के लिए दो साल का अन्तर होना चाहिए। वह बच्चा उनका ही क्यों न हो।
3) 21 वर्ष से कम और 35 साल से अधिक उम्र की महिलाएं अपनी कोख नहीं दे सकती है। इतना ही नहीं, कोई महिला सिर्फ एक बार सरोगेट मदर बनेगी।

4) इस तकनीक के तहत लि इन या समलैंगिक रिलेशनशिप में रहने वाले जोडे को इससे अलग रखा जाएगा।
5) सरोगेसी की पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाते हुए ए आरटी क्लीनिकों को भी निगरानी में लाया गया है।
6) कई अध्ययनों में यह तथ्य सामने आया है कि सरोगेसी से संतान चाहने वाले दम्पत्ति खास कर विदेशी जोडे एक साथ कई महिलाओं को गर्भाधारण करवा देते है। अगर कुछ महिलाओं में यह सफल हो जाता है तो जरूरत के मुताबिक एक या दो को छोड़कर बाकी सभी महिलाओं का गर्भपात करवा दिया जाता है ऐसे में सरोगेट मदर कारट में तय धन से वंचित कर दि जाती है। लिहाजा स्वयंसेवी संस्थाएं ऐसी महिलाओं के हितों की बात भी कह रही है।

जैसा कि विभिन्न जगहों पर इस प्रकार के अध्ययन सामने आए है। अभी तक विभिन्न जगहों पर यह सरोगेसी का कार्य हो रहा है। परन्तु अब लखनऊ में यह व्यापार देखने को मिल रहा है। यह एक पारंपारिक शहर है। जो अभी वैश्विक हो रहा है। यहां पर हम यह देखते है कि किस वर्ग, जाति, धर्म की महिलाएं हिस्सा ले रही है। और क्या वो लखनऊ से ही होती है। यह विभिन्न जगहों से भी महिलाएं सरोगेसी के काम के लिए है। चूंकि उत्तर भारत के लखनऊ शहर में पहली बार सरोगेसी का कार्य प्रारंभ हो रहा है। यहां पर अभी शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए हम अपने शोध कार्य में लखनऊ शहर में इन सारी बातों को देखने का प्रयास तथा खोज करने की कोशिश करेंगे। बनाने में सबसे अधिक हिस्सा ले रही है। सरोगेट बनाने तथा खरीदने वाले दोनों पक्षों के लिए क्या महत्वपूर्ण रखता है। लखनऊ जैसे शहर जो पहले सांस्कृतिक तथा परंपरावादी शहर था परन्तु आज वह वैश्विक शहर हो चुका है। पहले कि अपेक्षा हम देखे तो इस शहर में कम शिक्षित लोग तथा कम जागरूक लोग थे। परंतु आज वह ये आधुनिक समाज में आता है। आज भी लोग उतना शिक्षित तथा उतने जागरूक नहीं है। थोडा सा पिछडा हुआ है। यह शहर सांस्कृतिक तथा यहां के लोग परंपरावादी है तथा इसी क्रम में देखत तो

सरोगेसी प्रजनन की नई तकनीक वहांतक पहुँच गई है। क्या जो अनुप पाण्डेयकी सरोगेट मदर एजेंसी है। उसमें सरोगेसी कार्य में क्या गरीब महिलाएं आती है। या फिर अमीर महिलाएं ही हिस्सा लेती है। क्या यहां पर इनको कोई प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। और यह भी महत्वपूर्ण है कि यहां लखनऊ के लोग ही आएंगे या अन्य जगहों से भी लोग सरोगेसी के व्यापार में हिस्सा लेंगे। यह कारोबार लखनऊ में व्यापार के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। महिलाएं घरेलू श्रम करते हुए भी बच्चे को भी जन्म देती है। वैसे तो महिलाओं को पुर्नउत्पादन के लिए ही जाना जाता है। परन्तु यह श्रम जब घर से बाहर बाजार में आती है। तो उसकी कीमत अनूप पाण्डेय के द्वारा निर्मित सरोगेट मदर एजेंसियां पॉच लाख रूपए में एक सरोगेट मदर उपलब्ध कराते है। सरोगेट महिला तथा सरोगेट मदर को खरीदने वाले दोनों पक्षों के व्यक्तिगत अनुभवों को जनमा। क्या जो महिलाएं सरोगेट मदर से बच्चा लेती है। क्या वे समाज में हीन भावनाओं की नजरों का शिकार होती है और वो महिला को भी जो महिला सरोगेट मदर होती है। इसतरह हम यह देखने का प्रयास कर रहे है कि महिलाओं के मातृत्व के अधिकार का हनन हो रहा है। तथा सरोगेसी जैसे व्यापार का महिलाओं पर क्या प्रभाव पड रहा है। तथा कुछ नए तथ्यों का पता लगाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रश्न

1) समाज में सरोगेट मदर बनाने वाली महिलाओं के लिए क्या उनकी जाति, वर्ग, धर्म भी महत्वपूर्ण रखता है?
2) समाज में जब कोई महिला सरोगेट मदर बनती है। तो उसकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति में क्या परिवर्तन होता है?
3) सरोगेसी का लाभ लेने तथा लाभ देने वाली महिलाओं का उनका व्यक्तिगत अनुभव कैसा रहता है?
4) क्या सरोगेसी की वजह से मातृत्व के अधिकार का हनन हो रहा है। क्या सरोगेट मदर को मातृत्व का अधिकार मिलना चाहिए ?

5) सरोगेट मदर के लिए बनाए गए कानूनों, नितियों का उन पर नकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ रहा है या फिर सकारात्मक प्रभाव। क्या उनको इन कानून नीतियों का सही रूप से लाभ प्राप्त हो पा रहा है। या फिर नहीं?

उद्देश्य

1) वैश्विकरण के दौर में किराए की कोख का इतिहास का नारीवादी अध्ययन।
2) सरोगेट मदर तथा सरोगेसी धारण करने वाली महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक स्थिति का अध्ययन।
3) समाज में सरोगेट मदर के लिए बनाए गए कानूनों की स्त्रीवादी समीक्षा।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य में नारीवादी शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए गुणात्मक तथा परिणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए गुणात्मक तथा परिणामात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए प्राथमिक तथा द्वितीय स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार और अवलोकन का उपयोग किया जाएगा। द्वितीय स्रोत में पुस्तके पत्रिकाएं ऐतिहासिक प्रलेख प्रकाशित पुस्तकों का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के अस्पतालों का अध्ययन किया जाएगा। विशेष सन्दर्भ में (जवित्री अन्य सरोगेसी अस्पतालों का अध्ययन किया जाएगा)

प्रस्तुत शोध विषय वैश्वीकरण के दौर में सरोगेसी एक नारीवादी अध्ययन को व्यवस्थित करने के दृष्टिकोण से इसे पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है ताकि कार्य को अधिक सुचारू एवं बोधगम्य बनाया जा सके।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैंनें पुनरूत्पादन की तकनीक का परिचय नारीवादी दृष्टिकेण से सरोगेसी के प्रकार पुनरूत्पादन उत्प्रवसन (Reproductive turrism) मीडिया का दृष्टिकोण, प्रकृति के साथ खिलवाड आय.व्ही.एफ. पैकेज के तहत अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत सरोगेट मदर की केस स्टडी (विशेष संदर्भ लखनऊ) 03 महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत सरोगेसी के तहत बच्चे लेने तथा देने वाली महिलाओं पर प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक ग्रसित महिलाओं का अध्ययनल (फिल्ड वर्क के दौरान पाये गये तथ्यों पर)

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत सरोगेसी कानून की स्त्रीवादी समीक्षा, भारत के अलावा अन्य देशों के कानून का अध्ययन किया तथा कुछ मुकदमों का अध्ययन किया गया है।

अंत में तथ्यों का विश्लेषण किया गया। शोध प्रबंध के लिए सामग्री एकठ्ठा किए जाने हेतु विविध पुस्तके ज्यादा तर वेब साइड, अखबार से जानकारी उपलब्ध हुई है। शोध से संबंधित साक्षात्कार लेने के लिए विविध समस्याओं का सामना करना पडा।

उपसंहार

वैश्वीकरण में सरोगेसी और सरोगेट मदर की जरूरत क्यों पड़ी यह बताने का प्रयत्न किया है। वैश्वीकरण के जरिए समाज में चारो तरफ उथल-पुथल मच गई है। संसार का कोना-कोना वैश्वीकरण के चपेट में आ रहा है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, शारीरिक, मानसिक रुप से आधुनिकता की और बढ़ रहा है। वैश्वीकरण के कारण वैज्ञानिकों द्वारा उद्भव कि गई पुर्नउत्पादन की नई तकनीक सरोगेसी। यह तकनीक प्रत्येक देश प्रत्येक राज्य में अपनी जगह बना चुकी है। फिर भी व्यक्तियों की मानसिकता को बदलने में असमर्थ रही है। क्योंकि धर्म, जाति, वर्ग का विभाजन तो हजारों साल पहले ही हो चुका है। इसलिए वर्तमान समय में इस मानसिकता को इतनी शीघ्र बदला नहीं जा सकता है। और भारतीय समाज में रक्तशुद्धता की अवधारण अभी भी जीवित है। लोगों के मन पर इस कदर काबू पा रखे कि मनुष्य अपनी जाति, धर्म की बात करता है। इस तरह एक महिला जो बच्चे को जन्म नहीं दे सकती है वह भी अपनी कोख की ही मांग करती है। सरोगेटतो दूसरी मदर है परन्तु जब उसकी कोख को खरीद लिया जाता है। तबतो वह कोख उनकी हो जाती है। ऐसा व्यक्तियों, महिलाओं का मानना है कि वह अपना बच्चा ले रहे है जो कि अपना खुन है। यही करते एक महिला दूसरी महिला की कोख खरीद लेती है। इस तरह हम कह सकते है। वैश्वीकरण अभी भी लोगों की मानसिकता बदलने में असमर्थ है। हजारों साल पड़ी धार्मिकता की नींव को तोडने में असमर्थ रहा है। आज भी खून के रिश्तों को अधिक महत्व दिया जाता है। और इस सारी महत्वकांक्षा के चक्कर में एक महिला घुन की तरह पितृसत्ता की चक्की में पिसती चली जाती है। वर्तमान समय में पुर्नउत्पादन की वजह से अब महिलाओं की यौनिकता पर नियंत्रण पानेकी कोशिश की गई है। समाज में महिलाओं के पास जो एक बच्चा पैदा करने की शक्ति थी। उसको महिलाओं से वैज्ञानिक अविष्कारों ने छीन लिया है। अब महिलाएं अपने ऊपर गर्व भी नहीं कर सकती है। इस वजह से पितृसत्ता को बढावा मिल रहा है। इस कारण से भी महिलाओं पर लगातार शोषण हो रहा है। तथा महिलाओं पर मानसिक,

शारीरिक रुप से अधिक प्रभाव पड़ रहा है। सरोगेसी का महिलाओं पर नकारात्मक तथा सकारात्मक प्रभाव मिलते है। इसके लिए कानून प्रक्रिया भी नहीं बनी है। फिर भी यह कार्य बुलन्दियों को छु रहा है। कानून भी एक तरह से इसको बढावा दे रही है। क्योंकि राज्यों में सरोगेसी क्लीनिकों से दिये जाने वाले पैकेजों से राज्य सरकार की अनुमति होती है। तथा सरकार को भी फायदा मिल रहा है।

इसी सन्दर्भ में शोध कार्य का क्षेत्र उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में नार्थ इण्डिया सरोगेट से जानी जाने वाली एजेन्सी के मालिक डॉ अनुप पाण्डेय जी है। क्षेत्र पर शोध करने के दौरान कुछ इस तरह तथ्य सामने आते है। लखनऊ एक सांस्कृतिक, पारंपरिकता में डुबा हुआ शहर है। गांवों के इलाके अधिक है। गरीबी कूट-कूट के विद्यमान है। इस तरह वहां के महिलाएं अशिक्षित तथा जागरूक नहीं है। इसीलिए सरोगेट मदर अधिक गरीब है। आर्थिक समस्या से मजबूर महिलाएं इस कार्य में हिस्सा ले रही है। जिनके पास सपने तो बहुत है परन्तु उनको पूरा करने के लिए पैसों की कमी है। गरीबी तथा अशिक्षा से लगातार कठिनाई का सामना करती ये महिलाएं इनका कहना है कि वह इसके अलावा और कोई काम नहीं कर सकती है। और वह इस कार्य को अच्छा भी मानती है। वहां सरोगेसी करवाने वाले लोग अपनी संतान पाने के लिए आते है। क्योंकि वहां पर पांच लाख में ही सरोगेट पर उपलब्ध है। इससे ये साफ नजर आता है। लखनऊ शहर में भी इसका बाजार बनता जा रहा है। शोध कार्य के क्षेत्र के तथ्यों के अन्त बस एक वाक्य में कहना चाहती हूँ कि आर्थिक समस्याओं के तहत किये जा रहे इस काम को अंजाम देते वक्त महिलाओं की मानसिक स्थिति पर शारीरिक स्थिति से अधिक प्रभाव पडता है।

मेरे मत के अनुसार –समाज में सरोगेसी जैसे कार्य को वैश्वीक रुप से बढावा नहीं मिलना चाहिए। सरोगेसी पुर्नउत्पादन की तकनीक का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए है। इसके तहत जो एक बाजार गढ रहा है। महिलाओं की कोख का वस्तुकरण हो रहा है। महिलाओं के मातृत्व के अधिकारों का हनन हो रहा हैं। अस्पतालों के बीच स्पर्धा नजर आ रही है।

इसके खिलाफ जाने के लिए मनुष्यों को अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है। परन्तु मनुष्यों की मानसिकता बदलना इतना आसान काम नहीं है। इसलिए सरोगेसी बिल पास नहीं होना चाहिए तथा कानून को कानूनी तौर पर इस काम को प्रतिबन्धित कर देना चाहिए। तथा प्रतिबंधित करने के बावजूद भी अगर कोई अस्पताल, अगर कोई व्यक्ति इस कार्य को कर रहा है। तो उसे जुर्माने के साथ-साथ दण्डित किया जाना चाहिए। नि:संतान दम्पतियों के लिए गोद लेना अनिवार्य कर देना चाहिए। इससे अनाथ बच्चों को माता-पिता, घर परिवार का प्यार मिलता है, एक नई जिंदगी मिल सकती है। इस कानून को सख्त तरीका अपनना होगा। एक चीज और कहना चाहती हूँ कि भारतीय कानून में महिला आयोग को भी इस बारे में सोचना चाहिए महिला आयोग बहुत धीमी गति से कार्य कर रहा है। कम से कम अब तो जाग जाना चाहिए महिलाओं के प्रति। अन्त में बस यही कहना चाहती हूँ। सरोगेसी के बजाय बच्चों को गोद लेने में विश्वास किया जाये तो शायद एक माँ की कोख का नाम किराए की कोख न कह कर माँ कहा जाए।

सरोगेसी नार्थ इंडिया एजेंसी ने प्रदेश में दी दस्तक

अब यूपी में भी मिलेगी किराए की कोख

जानकारी देते एजेंसी के अधिकारी

सरोगेसी क्यों!

कानून एवं नियम

आज

सोरोगेसी होगी बांझपन की पीड़ा झेल रही महिलाओं के लिए वरदान

लखनऊ, रविवार (आज समाचार सेवा)। बांझपन की पीड़ा को झेल रही महिलाओं के लिए राजधानी में पहली बार सोरोगेसी प्रक्रिया से विभिन्न प्रकार की चिकित्सीय प्रयासों के बावजूद प्रेगनेन्सी गर्भधारण में असफल हो जाते उनके ही भ्रूण को बाहर फर्टिलाइज कर किसी अन्य माँ के गर्भ में रोपण कर दिया जाता है। राजधानी के होटल में सरोगेसी नार्थ इंडिया के सी.ई. अनूप पाण्डेय ने आज नि:संतान बांझपन की दशा को झेल रही महिलाओं को संतान प्राप्ति कराने के लिए राजधानी में शुरू हुई पहली बार व्यवस्था के बारे में बताते हुए कहा कि सरोगेसी प्रक्रिया ने देश व विदेशों में लाखों नि:संतान दम्पत्ति को अपना बच्चा पाने की एक उम्मीद जगायी है। खासकर उन लोगों के लिए एक नई आशा की किरण है।

राजधानी में पहली बार की गयी शुरूआत

उन्होंने बताया कि सरोगेसी नार्थ इण्डिया ने पहली बार सरोगेट एजेंसी खोलने के लिए जानकी हास्पिटल एण्ड टेस्ट ट्यूबबेबी सेन्टर खोलने के लिए उत्तर प्रदेश में पहला सेन्टर होगा जो नियमता और तरीके से सोरोगेसी प्रक्रिया को पूरा करेगा। श्री पाण्डेय ने बताया कि सरोगेसी प्रक्रिया में पति दम्पत्ति तमाम चिकित्सीय प्रयासों के बावजूद प्रेग्नेन्सी या गर्भधारण में असफल हो जाते हैं उनके भ्रूण को बाहर फर्टिलाइज कर किसी अन्य माँ के गर्भ में रोपण कर दिया जाता है। श्री पाण्डेय ने बताया कि सरोगेसी उनके लिए वरदान साबित होगा जिनको सभी सम्भव इलाज के बावजूद बच्चा न रुकना, कई बार आई.वी.एफ. तकनीकी का फेल होना गर्भाशय का ट्यूमर, असामान्य गर्भाशय, गर्भधारण में अक्षमता, गर्भधारण एवं डिलेवरी के लिए शारीरिक स्वास्थ्य अनुकूल न होना गर्भाशय का न होना या सर्जरी द्वारा हटा दिया गया हो, कई बार गर्भपात होना व मेडिकल समस्या जैसे डायबिटीज क्रोनिक नेफ्राइटिस आदि समस्या से निजात देने के लिए यह प्रक्रिया वरदान साबित होगी। उन्होंने बताया कि एक बार सरोगेट सुनिश्चित हो जाने के बाद उसका मेडिकल फिजिकल मानसिक चेकअप होता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि सरोगेट पूर्णतया शारीरिक एवं मानसिक रूप से इस प्रक्रिया के लिए तैयार है।

पांच लाख में मिलेगी सरोगेट मदर

डॉ. ईशा त्यागी और अनूप पांडेय

लखनऊ में खुली नार्थ की पहली सरोगसी एजेंसी

inext reporter

LUCKNOW (24 Dec): जिन कपल्स को किन्हीं कारणों से बच्चा नहीं हो पा रहा है उन्हें अब बच्चे की चाहत में बड़े शहरों का रुख करने की जरूरत नहीं हैं. अब लखनऊ में सरोगेसी नार्थ इंडिया नाम से उत्तर भारत की पहली सरोगेसी एजेंसी खुल गयी है. ये एजेंसी बच्चे की चाहत रखने वाले कपल्स को सरोगेट मदर प्रोवाइड कराएगी. ये सब एक पैकेज के तहत किया जाएगा जिसका पूरा खर्च लगभग 5 लाख रुपए के करीब आएगा. इस एजेंसी के संस्थापक अनूप पाण्डेय ने बताया कि,' हमारी एजेंसी पूरे नार्थ इंडिया में अपनी तरह की अकेली एजेंसी है जो कि बच्चा चाहने वाले कपल्स को सरोगेट मदर्स प्रोवाइड कराएगी. इसके लिए हमने लखनऊ में जावित्री टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर से टाइअप किया है.'

लखनऊ में सरोगेट एजेंसी दिलाएगी सरोगेट मदर

आईवीएफ से लेकर प्रसव तक का जिम्मा उठाएगी एजेंसी

लखनऊ। गर्भधारण न कर पाने वाली महिलाओं के लिए अच्छी खबर है। अब लखनऊ में सरोगेट नार्थ इंडिया नामक एजेंसी ऐसी महिलाओं को सरोगेट मदर की सुविधा दिलाएगी। एक मुश्त रकम अदा करने के बाद यह एजेंसी सरोगेट मदर दिलाएगी। यह सुविधा जावित्री हॉस्पिटल एंड टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर के साथ मिलकर दी जाएगी।

रविवार को एक प्रेस वार्ता के दौरान जावित्री हॉस्पिटल एंड टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर के डॉ. ईशा त्यागी ने बताया कि वह दम्पती जो सभी सम्भव इलाज के बावजूद बच्चा न कर पाना, कई बार आईवीएफ के फेल होने, गर्भाशय का टूटना, असामान्य गर्भाशय, गर्भधारण में असमर्थता, गर्भाशय एवं झिल्लियों के लिए शारीरिक स्वास्थ्य अनुकूल न होना, गर्भाशय का न होना या सर्जरी द्वारा हटा दिया गया हो, कई बार गर्भपात होना, या हाइपरटेंशन, हार्ट एवं किडनी या क्रोनिक नेफ्राइटिस की समस्या के कारण परेशान हैं उनके लिए सरोगेसी ने अपना बच्चा पाने की एक उम्मीद जगाई है।

सरोगेट नार्थ इंडिया के संस्थापक अनूप पांडेय ने बताया कि अभी लखनऊ में जो लोग सरोगेट मदर की सहायता लेते हैं वह उनकी रिश्तेदार ही होती है लेकिन जिनके यहां कोई रिश्तेदार नहीं है वह निराश रहते हैं, इसलिए यह एजेंसी लॉन्च की गई है। यह एजेंसी कम से कम खर्च में पूरी सरोगेसी प्रक्रिया के साथ ही उसका भरण पोषण, खर्च, रहने की व्यवस्था, चिकित्सा और निवास का ध्यान रखेगी। उन्होंने बताया कि यूपी में ऐसी सुविधाएं प्रदान करने वाली यह पहली एजेंसी होगी। आईवीएफ से लेकर सरोगेट मदर की सुविधा के बाद प्रसव के बाद तक का कुल खर्च लगभग पांच लाख रुपए होगा।

राजधानी में भी मिलेगी किराए की कोख

लखनऊ। सरोगेसी के जरिए संतान चाहने वाले दंपतियों को इसके लिए गुजरात या दिल्ली जाने की जरूरत नहीं है। सरोगेसी नॉर्थ इंडिया ने लखनऊ में ही यह सुविधा शुरू कर दी है। इसके लिए संस्था ने जावित्री टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर एंड हॉस्पिटल से करार किया है। गर्भाशय के ट्यूमर, कई बार गर्भपात या दूसरी दिक्कतों की वजह से महिलाएं गर्भ धारण नहीं कर पातीं। रविवार को प्रेसवार्ता में सरोगेसी नार्थ इंडिया एजेंसी के सीईओ अनूप पांडेय ने बताया कि संतान की इच्छा रखने वाले दंपतियों के लिए सरोगेसी मदर का चुनाव संस्था करेगी। आम तौर पर 21 से 35 वर्ष आयु तक की महिलाएं ही सरोगेट मदर हो सकती हैं। सरोगेसी से जुड़ी कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने का जिम्मा भी संस्था का होगा। जावित्री टेस्ट ट्यूब बेबी एंड हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. ईश त्यागी ने बताया कि इन विट्रो फर्टीलाइजेशन (आईवीएफ) पद्धति से भी जिन दंपतियों को संतान नहीं हो पा रही उनके लिए सरोगेसी बेहतर विकल्प है।

खास रपट सरोगेसी

गोद भराई (बाएं से) सरोगेट मदर 24 वर्षीया माधुरी सुरभि पटेल, 28 वर्षीया निरंजना सरला पटेल और 27 वर्षीया रुक्मिणी रेड्डी, सरोगेट-हाउस में मिल-जुलकर सातवें महीने में होने वाली गोद भराई की रस्म पूरी करते हुए

खास रपट सरोगेसी

डॉक्टर अपने काम में लगे हुए 55 वर्षीया डॉ. नयना पटेल (दाएं) और 36 वर्षीया डॉ. हर्षा बावर्सा के साथ मां के गर्भ में भ्रूण को स्थापित करते हुए. यहीं से सेरोगेसी चक्र की शुरुआत होती है

Table : 1 household income

Panjab		Delhi	
Surrogate	**Household income (average/per month INR)**	**Surrogate**	**Household income (average/per month INR)**
SP1	4000-4500	SD 1	10500
SP 2	6000-7000	SD 2	9000-10000
SP 3	4500-5000	SD3	10000
SP 4	3000	SD4	NA
SP 5	7500	SD 5	4500
SP 6	15000	SD 6	12000

Source ; fild data ,December 2011 – april 2012

Note ; SD 4's only source of income was her current surrogacy arrangement

Table 2 : number of live birth and time gap between previous childbirth and surrogacy

sourece; field data –december .2011 –april 2012 ;pc –pregnancy confirmed ; PNC –pregancy

surro gate	No. of children Per to surrogacy	Surrogate Birth	Total no. of live Birth	Time gap between last child birth And surrogate pregancy
SD 1	3	1	4	4 YEARS
SD 2	2	1	3	4 YEARS
SD 3	2	2(tiwns)	4	3 YEARS
SD 4	4*	pc	4	7 YEARS
SD 5	3	PNC	3	6 YEARS
SD 6	1	PNC	1	NA
SD 1	2	Pc	2	12 YEARS
SD 2	2	1 (previous) Pc currently	3	10 YEARS PRIOR TO SURROGACY 1 YEAR SINCE FIRST SURROGACY
SD 3	2	pc	2	NA
SD 4	1	PC	1	NA
SD 5	5	PNC	5	NA
SD 6	1	2	3	YEARS

not confimed yet

NA – infoemation not available

Note ; sp4 currently lives with three duildren (1 daughter and 2 sons) she had given away her second her second son when he was eight months old to a child- less couple .faceing the new born's illness while she separated frome her husband and in financial difficulties ,she was unabe to affard treatment and gave him awaay so away so he could be for well

Table ; 3 location of residence

Coad	Permanent residence	Surrogacy Location	Code	Permanent residence	Surrogacy Location
SP 1	Jalandhar , punjab	Jalandhar	SD 1	In delhi fore 8 year (migrated for Work forme west bengal)	Delhi
SP 2	Bababakala, Punjab	Jalandhar	SD 2	Indore (residing in delhi for the Duration of surrogate pregnancy)	Delhi
SP 3	Ludhianna, Punjab	Jalandhar	SD 3	Delhi (originally forme bihar)	Delhi
SP 4	Kapurthala, Punjab	Jalandhar	SD 4	Delhi	
SP 5	Kapurthala, Punjab	Jalandhar	SD 5	Delhi (migrated for work)	
SP 6	Chandigargh,punjab	chandigargh	SD 6	Delhi during surrogacy (currently in Ranchi)	

Table : 4 nature and status of employment of surrogates and husbands

Code	Occupation/status of emploment		Husband's occupation/status of emploment	
	Prior to surrogacy	During/aftersurrogacy	Prior to surrogacy	During/aftersur rogacy
SP 1	Garment ; stitching (10-15yrs)	Disscounted (unable to Following surrogacy)		
SP 2	Housewife	Same		
SP 3	Garment stitching forme home not regular , sometime for neighbors	Stitching work; planning To buy a machine with Specialized unction (fore overlok)	Auto deriver	Same –now he driver Chhata haathi (local Vehicle)
SP 4	Cook (3 year –makes roits at wedding ,seasonal –only in winters) ; domestic worker (regular)	Unable to do any work	Daily wage workes in The catering business -"halwayi"(for Weddings)(seasonal)	same
SP 5	Serves tea in an office in a coach Factory (6 year). Earlier as labourer in villege	Same	Supervisor in a coach factory	same
SP 6	Housewife	Same	Service(office job)	same
SD 1	Placement agency ("place girls In big offices "or domestic Work) Previously patient care (ren a nursing burenau ,placing nursing for patient care), earlier garment export factory work (sitara ka kaam, measurement)	Discountinued work considering domestic Work –as a cook after Surrogacy	Patient care	same
SD 2	Garment stitching (piece work Forme home) earlier papa- Rolling work at home	Continued stitching	Garment ;embroider y (factory)	Unable to find work in Delhi due to relocation
SD 3	Peer education at anNGO Assisting people (mostly sex workers) in getting treatment And medicines for HIV ,STIs , UTI	Continues in a limited Manner –coordinates Over phone .(asked To discontinue by the Commissioning parents)	Export factory worker	Same
SD 4	Garment works ,stitch sequins in Women's shirts	Discontinued work after One month due to pain	Separated from	NA
SD 5	Housewife	none	cook	same
SD 6	Housewife ,earliar tuituions or Dancing classes . work as personal assistant to docterin The hosp ital where she was A surrogate fore some months has tried to sell a kidney (unsuccessfully)	Assistant to the docter After surrogacy ; currently Looking fore surrogacy P opportunitites	Hotel manager	Same

Source; field data, December 2011-april2012

Note *wemen engaged in care work of their families and household with no empioyment outside home

सरोगेट मदर एजेन्सी के लिये प्रश्न

1) समाज में लखनऊ शहर में सरोगेसी किस प्रकार से उभर कर सामने आ रही है?
2) अनूप पाण्डेय ने जो सरोगेट मदर एजेन्सी की आरम्भ किया है वह सरोगेट मदर के जरूरतमंद लोगों की मदद करने में सफल हो पा रही है?
3) क्या यहां पर केवल लखनऊ शहर की महिलायें होती है। या फिर बाहर के लोग भी होते है?
4) आप लोग सरोगेसी को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों में से किस रूप में देखते हैं
5) आप लोग सरोगेट मदर को कहां से लाते है और कैसे?
6) क्या आप के यहां कोई ऐसा केस आया है जिसमें सरोगेट मदर से जन्म लिया बच्चा शारीरिक रूप से स्वस्थ न हो तो उस सरोगेट मदर को उसके धन से वंचित कर दिया गया हो?
7) अगर हां तो क्या कारण रहता है जबकि वह बच्चा तो उनका ही होता है फिर ऐसा क्यों?
8) अगर नहीं तो क्या उस बच्चे को सरोगेट मदर के पास रहना पडता है?
9) क्या आप लोगों को ऐसा लगता है कि सरोगेट मदर को भी माँ का दर्जा दिया जाना चाहिए?
10) आप की क्या राय है सरोगेसी आइ.सी.एम.आर. के बारे में क्या आपको लगता है कि कानूनी रूप से सरोगेसी सही है?
11) क्या यह प्रक्रिया इन विट्रो फरटिलाइजेसन के तहत होती है?
12) क्या आप के यहां कोई सरोगेट होम भी है? यदी हाँ तो
13) क्या इस सरोगेसी में सरोगेट मदर आपके सरोगेट होम में रहती है?
14) क्या आप सरोगेट मदर को सरोगेट होम में किसी प्रकार का प्रशिक्षण भी देते है?
15) क्या सरोगेसी धारण करने के लिए सरोगेट मदर की जाति, धर्म, वर्ग की महत्वपूर्णता होती है?

16) क्या सरोगेसी उन स्त्रीयों की मानसिक स्थिति पर प्रभाव डालती है जो बच्चे को जन्म नहीं दे सकती है, कही वो ये तो नहीं सोचती है कि उनको परिवार और समाज में हीन भावना की नजरों से देखा जा रहा है?

17) क्या इस एजेंसी में ग्रामीण लोग या फिर शहरी लोग भी सरोगेसी कार्य में हिस्सा लेते है या फिर केवल आर्थिक समस्या से परेशान लोग ही संपर्क करते है?

18) क्या यहां पर किसी भी जाति, धर्म, वर्ग के लोग सरोगेसी कार्य में हिस्सा ले सकते है?

पेसेण्ट के लिये प्रश्न

19) आप सरोगेसी से ही बच्चे को क्यो पाना चाहते है, आप किसी बच्चे को गोद भी ले सकते है। क्या आप किसी बच्चे को गोद लेने मे इच्छुक नही है ?

20) क्या समाज मे माँ न बन पाने की वजह से आप को हीन भावना की दृष्टि से देखा जाता है ?

21) क्या डॉक्टर आपकी पूरी तरह बच्चे से मदद कर पर पाते है ?

22) क्या इस सरोगेसी के तहत बच्चे को अपनाने के लिए आपके घर वाले सहमत होते है ?

23) क्या आप अपनी व अपने परिवार की एवं अपने पति की सहमति से सरोगेट मदर का चुनाव करते है ?

24) आपका और आपके सरोगेट मदर के बीच कैसे सम्बन्ध रहते है ?

25) आपका सरोगेट मदर एवं डॉक्टर के साथ कोई कांटेक्क्ट होता है ?

26) क्या सरोगेट मदर की इच्छा से उनका धन तय किया जाता है या फिर नही ?

27) क्या आप सरोगेट मदर की पूरी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते है, बच्चे के जन्म ना हो जाने तक ?

28) क्या आप सरोगेट मदर को अपने साथ घर मे रखते है या फिर अस्पताल में रखना पसंद करते है या फिर पेसेण्ट पर निर्भर करता है कि वह कहाँ रहना चाहती है ?

29) क्या किसी भी सरोगेट मदर लेने से पहले आप उनकी जाति, धर्म, वर्ग को देखते है ?

30) क्या सरोगेट मदर के लिये उनकी शिक्षा, व्यवसाय, आयु एवं किस परिवार से सम्बन्ध रहती है यह सारी बाते महत्वपूर्ण होती है ?

31) क्या इस सरोगेसी में सरोगेट मदर आपके सरोगेट होम में रहती है ?

32) क्या आप सरोगेट मदर को सरोगेट होम में किसी प्रकार का प्रशिक्षण भी देते है ?

33) क्या सरोगेसी धारण करने के लिए सरोगेट मदर की जाति, धर्म, वर्ग की महत्वपूर्णता होती है ?

34) क्या सरोगेसी उन स्त्रीयो की मानसिक स्थिति पर प्रभाव डालती है जो बच्चे को जन्म नही दे सकती है कही वो से तो नही सोचती है कि उनको परिवार और समाज में हीन भावना की नजरो से देखा जा रहा है ?

35) क्या इस ऐजेंसी मे ग्रामीण लोग या फिर शहरी लोग भी सरोगेसी कार्य में हिस्सा लेते है या फिर केवल आर्थिक समस्या से परेशान लोग ही संपर्क करते है ?

36) क्या यहाॅ पर किसी भी जाति, धर्म, वर्ग के लोग सरोगेसी कार्य में हिस्सा ले सकते है ?

Hospital Doctor के लिए प्रश्न

1) जब कोई महिला सरोगेसी धारण करती है तो उसकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है ?
2) जब कोई सरोगेसी को सरोगेट मदर धारण करवाती है तो उसकी धारण करने की आपकी प्रक्रिया क्या होती है ?
3) अगर कोई व्यक्ति सरोगेसी के लिए एक महिला को सरोगेसी धारण करवाते है तो वह उसे अपने साथ अस्पताल में रखते है या फिर वह अपने ही घर पर रह सकती है ?
4) क्या घर से दूर रहना उनके लिए उचित रहता है ?
5) सरोगेसी के तहत कौन-कौन सी दवाइयों का प्रयोग किया जाता है और मेडिकल ट्रिटमेण्ट कौन सा होता है।
6) क्या जो लोग सरोगेसी, धारण करवाते है वो लोग उस महिला की देखभाल का पूरा खर्चा देते है ?
7) क्या सरोगेसी धारण करवाने वाले लोग बच्चा पैदा होने के उपरान्त तुरन्त सरोगेट मदर से अलग कर देते है या फिर कुछ समय सेरोगेट मदर के पास रखते है ?
8) क्या अस्पताल में सबसे ज्यादा लोग विदेशी होते है या फिर भारत के भी होतें है ?
9) सरोगेसी तथा बच्चा जन्म लेने के बाद सरोगेट मदर को उसकी मानसिक स्थिति तथा उनका व्यक्तिगत अनुभव क्या होता है ?
10) क्या सरोगेसी के कार्य में उनकी जाति, वर्ग, धर्म की महत्वपूर्णता होती है।

सरोगेट मदर के लिए प्रश्न

1. समाज में इस कार्य को किस नजरियों से देखते है ? नकारात्मक/सकारात्मक रूप से।
2. आपकी ऐसी कौन सी मजबूरी होती है तो आप यह कार्य करती है। सामाजिक समस्या/आर्थिक समस्या/अन्य समस्यायें।
3. क्या इस सरोगेसी धारण करने के लिए आप लोगों को शिक्षा, आयु तथा किस परिवार से है ? ये सारी बाते महत्वपूर्ण होती है।
4. क्या सरोगेट मदर बनाने के लिए आपको जाति, वर्ग, धर्म की महत्वपूर्ण रखता है।
5. बच्चे लाभ देने तथा लेने वाली महिला के व्यक्तिगत अनुभव क्या रहते है ?
6. क्या सरोगेसी के कार्य को आप लोग व्यापार के नजरिये से देखती है ?
7. लखनऊ क्षेत्र किस सरोगेसी के मामले में किस रूप से सामने आ रहा है।
8. क्या आप लोगों को यह कार्य करने पर कोई बन्धन होता है। किसी तरह की रोकटोक का सामना करना पड़ता है।
9. क्या सरोगेसी धारण करवाने वाला व्यक्ति आपको पूरी सुविधाऐ प्राप्त करता है ?
10. क्या आपको लगता है कि आपको माँ का दर्जा देना चाहिए या फिर नही ंतो क्यों ?
11. क्या समाज में सरोगेसी धारण करने वाली महिलाओं आप सभी को सरोगेट मदर के लिए बनाने गये नियम कानूनों/नीतियों का सही रूप से लाभ प्राप्त हो पा रहा है ?
12. सरोगेट मदर के लिए बनाये गये कानूनों/नीतियों का उन पर क्या प्रभा पड़ता है ?
13. क्या जो महिलायें माँ नहीं बन पाती है वो अपने आप में कैसा महसूस करती है।

14.क्या वजह है कि जब घर में महिलायें बच्चा पैदा करती है तो कोई आय नहीं मिलती है परन्तु एक महिला की कोख का जब बाजारीकरण होता है तो पाँच लाख रूपये कीमत लगाई जाती है क्यों ?

15.क्या यह कार्य एक श्रम तथा व्यापार बन गया है। यह एक व्यापार के रूप में उभर कर सामने आ रहा है।

Surrogacy tourism package

↓

Special package fore tourism

↓

Sample surrogacy packages

↓

- Planet hospital medical Tourism agency USA 15,75,000
- wyzax medical tourism agency .new Delhi 13,50,000

↓

- Surrogate charges Rs 1,00,000-3,50,000
- IVF procedure cost 56000 same IVF Packages Include up to 4 embryo transfer Attempts about 3-4 embryos to ensure Pregnancy package
- egg donor (India) Rs 1,00,000 extra highly qualified post graduate fertile fair complexioned egg donors can demand up to RS 50,000
- egg donor (Blue eyed) add anther RS 1,80,000 donor flown in from the US UK Russia
- twins body Rs 1,35,000 extra for Handling complica tion
- hiring a second surrogate add anther RS 4 lakh to the package the a will be an extra cost if both surrogate get pregnant and festal reduction need to be done
- surrog
  2,000
  This v
  cities
  day th
  than
  and ad
  surrog
  his ch
  texts a
  Also e
  any of
  help

संदर्भ ग्रंथ सूचि

प्राथमिक स्रोत

1) डॉक्टर से लिए गए साक्षात्कार

2) सरोगेट मदर से साक्षात्कार

3) पेसेन्ट (ग्राहक) से साक्षात्कार

द्वितीय स्रोत

1. अभय कुमार दुबे : भारत का भूमंडलीकरण, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, 2003, 2006, 2008, प्र. 28, 32, 34
2. Birthing A market A study on commercial Surrogatu : Sama. Resource Group for women and health, Delhi, 2012
3. भीष्य साहणी : माधावी, राजकमल प्रकाशन, 1984
4. Cheap and Best : Sama resource Group for women and health, 2008 (www.arts.com)
5. ज्योत्सना अग्निहोत्री गुप्ता, 'न्यू रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजी' वुमेंस हेल्थ एण्ड आटोनोमी सेज प्रकाशन, 2000
6. सुलामिथ फायर स्टोन, ' द डायलेक्टिक ऑफ', द विमेंस प्रेस 1979 प्रकाश, 2004
7. Stllina Jolly : Low Technology and women, Anarsi Road, Darya Ganj New Delhi, 2010
8. Susan Markens : Surrogatu Mother hood and the politics of Reproduction, Califarnia press London, 2007
9. Sandhya Srinivasan : Making Babils Birth Markets and Assisted Reproduction Technology in India, 2012
10. प्रभा खेतात : बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न, वाणी प्रकाशन दरिया गंज नई दिल्ली, 2004, 2007 प्र. 68, 120
11. Regulation of surrogacy in Indian context : Sama Resource Group for women and health, 2012
12. Robbil Danis Flagd Joseph Dunity : Cybarg Babiss (From Techno-Sex-techno-Tots) New yark and London Publication.

पत्र-पत्रिकाएं

1. अमर उजाला, बुधवार सितम्बर 04, 2013
2. इंडिया टुडे, सितम्बर 04, 2013
3. The Erest Edition, 'The Times of India', New Productive technologyes, 01.09.12
4. 07 Days the Telegraph looks at the week (ALCUTTA) Suday 21 July, 2013
5. The Suday Hindustan times, New Delhi, March 13, 2011
6. The Suday Hindustan times, New Delhi, 24/12/2006

वेबसाईड

1. file:///H:datao/सरोगेसी%20%गुजरात%20की%20'बेबी%20जहाँ%20मिलती %20... 3/21/2014
   www.Indiacurrents.com/articles/20/02/03 ethics-surrogacy
   www.legalseruicesindia.com/articles
   www.druijay shree.com/index main phd? do = menu2 and ./mid=/
5. h#P : // IVF.surrogat.com
   www.surrogacyclinics.com
   www.icmr.nic.in/about-US/Guidelines.htm
8. सरोगेसी होगी बांझपन की पीडा को झेल रही महिलओं के लिये वरदान
   https://www.facebook.com/media/set/?set=a.436272106427957.107017.353746041347231&type=3#!/photo.php?fbid=436272319761269&set=a.436272106427957.107017.353746041347231&type=3&theater
9. पांच लाख में मिलेगी सैरोगेट मदर
   https://www.facebook.com/media/set/?set=a.436272106427957.107017.353746041347231&type=3#!/photo.php?fbid=436272203094614&set=a.436272106427957.107017.353746041347231&type=3&theater